अग्रवाल महाविद्यालय में चल रहे एनएसएस विशिष्ट शिविर के छठे दिन दिनांक 23 मार्च 2024 की शुरुआत एरोबिक व्यायाम के साथ हुई। दैनिक प्रार्थना के पश्चात स्वयंसेवकों ने कैंपस स्वच्छता के लिए श्रमदान किया। सर्वप्रथम शहीदी दिवस के अवसर पर भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को पुष्पांजलि अर्पित की गई। दिन के पहले सत्र में आत्मनिर्भर युवा, विकसित भारत विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में सेवानिवृत्ति सहायक प्रोफेसर डॉ. टीडी दिनकर रहे। अपने वक्तव्य में उन्होंने स्वयंसेवकों को आत्मनिर्भरता से सामाजिक बदलाव लाने का संदेश दिया। उन्होंने आत्मनिर्भरता को आत्मविश्वास और विकास के माध्यम बताते हुए युवा पीढ़ी को नए विचारों की खोज और क्रियान्वन के महत्व बल दिया।

दूसरे सत्र में अंतरराष्ट्रीय जल दिवस के उपलक्ष्य में पब्लिक हेल्थ इंजीनियरों डिपार्टमेंट से श्री सत्यनारायण नेहरा के अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। उन्होंने जल संरक्षण की महत्ता और जरूरत को समय की आवश्यकता बताई और एनएसएस के माध्यम से जनमानस में जागरूकता लाने का आग्रह स्वयंसेवकों से किया। वैश्विक आंकड़े बताते हुए उन्होंने बताया कि किस तरह भू-जलस्तर में कमी आ रही है जो वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए चिंता का विषय है। इसके पश्चात इसी विषय पर संस्था द्वारा पोस्टर और स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को श्री सत्यनारायण नेहरा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

तीसरे सत्र में स्वयंसेवकाओ द्वारा डिमेंशिया ओल्ड एज होम मैं होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। स्वयंसेविकाओं द्वारा नृत्य और अभियान द्वारा वहां रह रहे बुजुर्गों का मनोरंजन किया और उन्हें अपनेपन का एहसास दिया। बुजुर्गों में अकेलेपन की समस्या गहन चिंता का विषय है। आज की भाग दौड़ भरी

जिंदगी में युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों के प्रति जिम्मेदारी को भुलाती जा रही है। एनएसएस के माध्यम से युवाओं में यह संदेश दिया गया कि बुजुर्ग हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और उनकी देखभाल किया जाना बेहद जरूरी है।

अंत में स्वयंसेवकों ने मनोरंजन सत्र में नृत्य, गायन और खेल की क्रीड़ाओं का आनंद लिया। इस कैंप का सफल आयोजन प्रबंध समिति और महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. संजीव कुमार गुप्ता के संरक्षण में किया जा रहा है । एनएसएस पीओ डा० शोभना गोयल, डा० सुप्रिया ढांडा और कुमारी रितिका सहरावत के अथक प्रयासों को प्राचार्य ने सराहनीय बताया गया।